B.Ed - II YEAR

C-8 (Knowledge & curriculum)

Date:
Page No.:

* मुदालियर आयोग के गुण एवं दोष ⟹

मुदालियर आयोग के गुण ⟹

1) शिक्षा के व्यापक उद्देश्य ⟹ आयोग ने माध्यमिक शिक्षा के व्यापक उद्देश्य निश्चित किए हैं तथा छात्रों के व्यक्तित्व विकास हेतु उनके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व चारित्रिक विकास पर बल दिया है। शिक्षा द्वारा लोकतंत्रीय नागरिकता के विकास से इसका तात्पर्य लोकतान्त्रिक सिद्धान्तों के ज्ञान और लोकतान्त्रिक जीवन शैली में प्रशिक्षित करने से है। नेतृत्व शक्ति और व्यवहारिक कुशलता का विकास ही लोकतंत्र की सफलता का आधार है।

2) पाठ्यक्रम के विविधीकरण द्वारा यथार्थवादी दृष्टिकोण का विकास ⟹ आयोग द्वारा सुझाया गया पाठ्यक्रम का विविधीकरण जीवन की समस्याओं के प्रति एक यथार्थवादी शिक्षा का माध्यम था, क्योंकि आयोग केवल साहित्यिक प्रकार की शिक्षा के बुरे परिणामों तथा इसके द्वारा पैदा होने वाली निराशा, बेरोजगारी आदि समस्याओं से पूर्णतया अवगत था।

3) बहुउद्देशीय स्कूलों व ग्रामीण स्कूलों की स्थापना ⟹ आयोग कि रिपोर्ट, बहुउद्देशीय स्कूल खोलने की संस्तुतियाँ समय की आवश्यकता के बिल्कुल अनुकूल थी। इसके साथ ही ग्रामीण स्कूलों की स्थापना भी भारत जैसे कृषकों के देश के लिए सर्वथा उपयुक्त थी।

4) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा ⟹ आयोग ने माध्यमिक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा को बनाने पर बल दिया है जो यथार्थ के धरातल पर लिया गया निर्णय है व हमारे देश के लिए हितकर है।

5) चरित्र निर्माण का माध्यम मातृभाषा ⟹ आयोग ने चरित्र और अनुपालन पर बल दिया है और इसकी प्राप्ति के लिए ठोस सुझाव भी दिये। इस तरह एक लम्बे समय चली आ रही अनुशासहीनता की समस्या को सुलझाने का प्रयास किया।

Date: / /
Page No.:

6) शिक्षकों की दशा में सुधार ⇒ आयोग उचित रूप से अध्यापक की स्थिति तथा कार्य स्थितियों में सुधार का समर्थन किया है, क्योंकि अध्यापक ही सम्पूर्ण शैक्षिक संरचना का रीढ़ है। इस कारण सर्वप्रथम आयोग ने शिक्षकों के प्रशिक्षण की अनिवार्यता के साथ शिक्षक प्रशिक्षण को प्रभावशाली बनाने के लिए ठोस सुझाव दिए। इसने शिक्षकों की नियुक्ति के लिए नियम बनाने, इनके वेतनमान बढ़ाने और इनकी सेवाशर्तों में सुधार करने की संस्तुति भी की। जिससे योग्य व्यक्ति अध्यापन वृत्ति की ओर आकर्षित हुए।

7) परीक्षा प्रणाली व मूल्यांकन में सुधार ⇒ आयोग ने परीक्षाओं तथा मूल्यांकन से संबंधित ठोस सिफारिशें प्रस्तुत की। ~~जिनका~~ जिनका यदि सख्ती से पालन किया जाये, तो इसके परिणाम उत्कृष्ट होंगे। सबसे महत्वपूर्ण सुझाव निबंधात्मक परीक्षाओं के दोषों को देखते हुए, निबंधात्मक प्रश्नों की रचना करते समय विचार प्रधान प्रश्न रखना तथा निबंधात्मक परीक्षाओं के साथ-साथ वस्तुनिष्ठ परीक्षा की भी व्यवस्था कराना था। आज यदि हम देखते हैं कि इन सुझावों को विचार करने से परीक्षा प्रणाली में अपेक्षित सुधार हुआ है। यह वस्तुनिष्ठ होने साथ-साथ विश्वसनीय भी बन गई है।

13.05.2020

C-11 (second year)

"पर्यावरण शिक्षा" पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। पर्यावरण शिक्षा किसी विज्ञान अथवा विषय के अध्ययन की अलग शाखा नहीं है। इसे जीवन पर्यन्त सम्पूर्ण शिक्षा के अन्तर्गत चलाया जाना चाहिए।

हमारे देश में पर्यावरण शिक्षा औद्योगिक संस्थाओं से जीवन बचाने के संकट से बचने की शिक्षा है और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों के ज्ञान और व्यवहार में जीवनपर्यन्त परिवर्तन लाने की ओर उद्देशित है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी जगत को उत्पन्न आने वाली सम्भावित विपदाओं से तथा उन्हें सुखमय जीवन देने का प्रयास करता है साथ ही उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे आगे आने वाली समस्याओं को पूर्व में ही जान सकें और उसका निवारण कर सकें।

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के निर्धारण का प्रारम्भ IEEP द्वारा आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यगोष्ठी में पर्यावरणीय शिक्षा के कार्यक्रम की दिशा एवं मार्गदर्शन बिन्दुओं को अन्तिम स्वरूप प्रदान किया विश्व के 60 राष्ट्रों के विद्वानों ने शोध पत्रों के आधार पर विश्व के 5 क्षेत्रों अफ्रीका, अरब राज्य, एशिया, यूरोप उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधियों ने सभी स्तर के विद्यार्थियों एवं युवकों के लिए पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य निम्न दे सकते हैं।

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य

① ~~जागरूकता~~ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक और पारिस्थितिकी की पर्यावरण अवलम्बिता के बारे में स्पष्ट जानकारी का विकास करना और इनमें ~~रुचि~~ रुचि बनाए रखना।